रविवार, दिनाँक **18-02-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जय हो जय हो, जय हो जय हो, जय हो जय हो ।

साजन एक पर नाम अनेक।।

कोई ओ३म् कहे, ओ३म्-कार कहे..... ओ३म्-कार, ओ३म्-कार।

कोई उसको अपर अपार कहे.....अपरंपार, अपरंपार।।

सतयुग दर्शन साजन को कोई।

नेहकलंक अवतार कहे .....अवतार, अवतार।।

साजन एक पर नाम अनेक।।

कोई कहता है सिरजन हारा .....सिरजनहारा, सिरजनहारा।

कोई कहता है पालनहारा.....पालनहारा, पालनहारा।।

सतयुग दर्शन साजन को कोई।

बिन सूरजों चमत्कार कहे.....चमत्कार, चमत्कार।।

साजन एक पर नाम अनेक।।

कई अविनाशी भी कहते हैं .....अविनाशी, अविनाशी ।

कई कहते पुरुषोत्तम परउपकारी.....परउपकारी, परउपकारी।।

सतयुग दर्शन साजन को कोई।

सर्वव्यापी निरंकार कहे.....निरंकार, निरंकार।।

साजन एक पर नाम अनेक।।

त्रेता में जो राम हुए.....श्री राम, श्री राम।

द्वापर बने वही कृष्ण मुरारी.....कृष्णा, कृष्णा।।

सतयुग दर्शन साजन हुए।

कलियुग में दसपातशाह सुखकारी.....सुखकारी, सुखकारी।।

साजन एक पर नाम अनेक।।

है ब्रह्मा दा वी ब्रह्म ओही.....ब्रह्म ओही, ब्रह्म ओही।

है सत्, चित्त आनंद ओही.....आनंद, आनंद।।

सतयुग दर्शन साजन तो है।

आद मध्य और अंत ओही.....आद मध्य और अंत ओही, आद मध्य और अंत ओही।।

अनंत बेअंत बेअंत ओही.....अनंत बेअंत बेअंत ओही, अनंत बेअंत बेअंत ओही।।

साजन एक पर नाम अनेक।

साजन एक पर नाम अनेक।।

जय हो जय हो, जय हो जय हो, जय हो जय हो।।

सजनों यह कीर्तन भगवान की सर्वव्यापकता के सत्य को जनाता है। अतः इसे सुनने व समझने के पश्चात हमारे लिये बनता है कि हम एक ही माने, एक ही जाने और एक ही प्रवान करें। याद रखो अगर हम ऐसा सुनिश्चित कर लेते हैं तो हम स्वयंमेव तीनों तापों से

मुक्त हो जाते हैं। बस, इतना सा मानसिक बदलाव करने पर फिर और कोई भी प्रयास करने की आवश्यकता नहीं रहती। समझ आई बात? अब ध्यान से सुनोः-

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

धर्म ते चलीं अधर्म न करीं, खुशी विच उमर बिता।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

संसार सागर तों महाबीर जी लंघावन, नाम दा कवच पहना।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

महाबीर जी दे चरणां विच प्रीत बढ़ावीं, रघुनाथ जी नू देसन मिला।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

सांवली सूरत नाल प्रेम बढ़ावीं, पंजां नू देवन भजा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

सारी उमर दुःखां विच गुजारी, हुन रघुनाथ जी दे दर्शन पा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

विषयां विच न उमर गवावीं, प्रीति हरि चरणां विच ला।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

नाम महाबीर जी दा हृदय विच ध्यावीं, चरण रघुनाथ जी दे देसन दिखा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

कंडयां दे रस्ते मूल न जावीं, उमर रघुनाथ जी दे चरणां विच बिता।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

अंध कूप विचों बली जी कढेसन, हर श्वास नाम ध्या।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

वाशना नू तुसी परे हटाओ, अन्धेरा देसन हटा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

कई सूरजां दा सूरज तू पावें, सारी उमर आनन्द दी बिता।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

मैं दासी सुरति सुरति पुकारां, हरदम चरणां विच जा।

नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा, जे रघुनाथ जी दे मिलने दा चाह।

इस भजन के तहत् परोपकारी श्री साजन जी सजनों को समझाने हेतु, पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि अपने ख़्याल पर पकड़ रखो ताकि यह दुनियाँ की ओर न जाये। इस संदर्भ में ज्ञात हो कि यदि हमारा ख़्याल दुनियाँ की ओर चला गया तो वह उसी में ही उलझकर रह जायेगा जोकि अपने आप में अपने धर्म से गिरने की व अनिष्ट को प्राप्त होने की बात होगी। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमारे लिये बनता है कि हम अपने ख़्याल पर न केवल नज़र रखें अपितु साथ ही साथ पकड़ भी रखें ताकि हमारी सुरत हर समय यानि श्वास-प्रश्वास सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में बनी रहे। जान लो यदि ऐसा हो गया तो फिर जो प्रभु मिलन का रास्ता/युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी बतायेंगे, उसके अनुशीलन द्वारा सुरत के लिये शब्द के साथ मेल खाना आसान हो जायेगा।

सजनों ऐसा ही हो इस हेतु सच्चेपातशाह जी चेतावनी देते हुए सुरत/ख़्याल को कहते हैं कि जो भी संसारी विषय हैं उनमें चित्त मत लगाना अन्यथा वृत्ति विकृत हो जायेगी। वृत्ति का विकृत होना काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के मन में घर करने का हेतु है जो कि नुक्सानदायक व जीवन हारने की बात है क्योंकि इस कारण हम यथार्थता से दूर हो जाते हैं। यथार्थता से दूर होने के कारण ही सजनों आज जीवन में हमारी दुर्गति हो रही है। हमे समझ नहीं आता सजनों कि जब दुर्गति होती है तो फिर हम क्यों रोते हैं? यह तो अपनी ही गलती का दुःखदायी फल हमें प्राप्त होता है। ऐसा न हो इसलिए सजनों सच्चेपातशाह

जी कहते हैं कि अपनी सुरत को समझा लो कि वह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में ही अपना ध्यान स्थिर रखे। ऐसा सुनिश्चित करने पर वह स्वयं ही सुरत का शब्द से मेल करा देंगे और आप परमार्थ की राह पर आगे बढ़ सकोगे। तत्पश्चात परम अर्थ को सिद्ध करने के निमित्त विश्राम से जीवन जी सकोगे और अन्त अपने जन्म की बाज़ी जीतकर अपना जीवन सफल बना सकोगे।

सजनों इस परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता यह है कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होते हुए भी हम क्योंकर इस काबलियत को प्राप्त करने में आधे-अधूरे रह गये? निःसन्देह, यह हमारी अपनी ही लापरवाही के कारण हुआ है। अपनी लापरवाही के कारण ही हमने अपने जीवन में इतने अधिक दुःख क्लेश एकत्रित कर लिये कि हमारे लिए अब अपनी सुरत को सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में जोड़कर ध्यान-स्थित रखना असम्भव सी बात हो गई है। याद रखो जो इन्सान अपने साथ ऐसा द्रोह करता है, वह सख़्त सज़ा का अधिकारी होता है क्योंकि बार-बार समझाने पर भी वह मनमानी के रास्ते पर ही आगे बढ़ता है। सजनों यह अवज्ञा है जो कि हमें परमार्थ की ओर अग्रसर होने से रोकती है और फलस्वरूप हमारे लिए परमपद पाना कठिन हो जाता है। इस बात को समझते हुए सजनों हम तो यही कहेंगें कि हे मानव ! अब तक जो भूल हुई सो हुई, परन्तु आज जो आवाहन सुना है, उस आवाहन को स्मृति में रखते हुए अपने ध्यान/ख़्याल को जगत से विमुख कर यथार्थ आत्म-स्वरूप में साधे रखना सुनिश्चित कर। जान यह सुनहरी बदलाव लाने का व सुरत शब्द का ऐक्य भाव में आने का समय है यानि उचित मौका है। अतः अपने आप को समझा लो और अपनी बुद्धि को पलटा खवाकर, जिस कठिन रास्ते पर चढ़े हुए हो, उस पर आगे बढ़ना बन्द कर दो। इसके स्थान पर जीवन का जो सुगम शास्त्र विहित विचारयुक्त रास्ता है उसको अपनाकर अपना जीवन सफल बना लो। समझ आई बात? अब आगे सुनोः-

चौपाईयां

ए दुनियां अजब तमाशा है। सजनों वेख के आंदा हासा है।।

हुन रघुवर जी दी तूं शरणी आ। ओ इको सब दा दाता है।।

मूर्ख रोंदा ही नज़र आंदा है। अभिमानी हस्से ते मखौल उड़ांदा है।।

इस जिन्दगी दा नहीं भरवासा है। ए दुनियां अजब तमाशा है।।

हुन पल विच शत्रु नज़र आंदा है। होश आई ते सजन बन बहंदा है।।

नाले ओ शोर मचांदा है। जिन्दगी घुले जिवें पताशा है।।

जिन्दगी घुले जिवें पताशा है। ए दुनियां अजब तमाशा है।।

मोह माया बिना ग़मग़ीन होया। ग़मग़ीन होया परेशान होया।।

भुलिया धन दियां मौजां माणदा है। गर्ज़ मार गरीब डरावंदा है।।

अधा अन्ना ते अधा सुजाखा ए। ए दुनियां अजब तमाशा है।।

उलटे रस्ते ते चढ़यों तूं। औझड़ां दे विच वड़ियों तूं।।

बलधारी जी दी तूं शरणी आ। ओ रस्ता देवन तेरा उलटा।।

रघुवर जी दे प्यारे दी आशा है। ए तमाशा नहीं हुन हासा है।।

हुन सब दी औषधि बलधारी जी हैं। जैं परखी सब दी नाड़ी है।।

जेहड़ा पीवे होंदी दूर बिमारी है। हृदय विच चरणां दा वासा है।।

हृदय विच चरणां दा वासा है, ए दुनियां अजब तमाशा है।।

सजनों इस कीर्तन में सच्चेपातशाह जी ने बड़े ही सरल शब्दों में दुनियाँ की हालत का वर्णन करते हुए हम बुद्धिहीन सजनों को समझाने का प्रयास किया है। अतः यदि अपने प्रति प्यार है तो अपने जीवन को तमाशा मत बनाओ। आप ही बताओ कि मानव होते हुए भी यदि हमारा जीवन तमाशा बन जायें तो क्या अच्छा लगेगा?

'नहीं जी'।

जब हमारी करनी पर कोई हँसे व मखौल उड़ाये तो क्या अच्छा लगेगा?

'नहीं जी'।

जानो ऐसा जीवन धिक्कारनीय होता है। इतना सब कुछ सुनते-समझते हुए भी सजनों ऐसे नकारात्मक जीवन से क्यों प्यार करते हो? क्यों नहीं अपने ख़्याल को इस तमाशे से ऊपर उठा पा रहे? माना किस्म्त से सजन श्री शहनशाह महाबीर जी की शरण में आये, पर उसमें भी केवल दिखावा है यानि कोई सत्य नहीं है। अन्य शब्दों में द्वारे पर लगे होने के बावजूद, तरह-तरह के अधर्म-कुकर्म करके व अनिष्ठा को प्राप्त हो निन्दा के पात्र बनके, हम अपना मज़ाक खुद उड़ा रहे हैं और उड़वा भी रहे हैं। इस सन्दर्भ में सजनों हम मानते हैं कि पल भर को आपको सत्य बात की समझ भी आती है परन्तु फिर अगले ही पल हम फिर भूल जाते हैं कि हम स्वाभाविक रूप से जिस रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं, वह रास्ता गुरुमत का नहीं अपितु मनमत की ओर जा रहा है। जानो यह निरर्थक जीवन जीने की बात है और हमारी इस मानसिक कमज़ोरी को दर्शाता है कि हम तीनों तापों से ग्रस्त हैं। याद रखो सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से विदित युक्तियाँ प्राप्त होने के पश्चात भी अगर हम तीनों तापों से मुक्ति पाने में असमर्थ हैं तो हम अपने वैरी खुद आप हैं क्योंकि हम प्रसन्नता खोकर दिनचर्या के दौरान सोचों में डूबे रहते हैं जोकि उलटा रास्ता है।

इस संदर्भ में सजनों अब सच्चेपातशाह जी कह रहे हैं कि 'बलधारी जी दी शरणी आ जाओ'। यह कार्य केवल आपके कहने मात्र से ही नहीं सिद्ध होगा अपितु इसके लिए तो तन-मन-धन से उनके वचनों की पालना करनी होगी। अतः उनके वचनों की पालना करना अपना नियम बना लो और उस नियम पर मज़बूत रहते हुए नियमित ढँग से जीवन जीना आरम्भ कर दो। ऐसा करने से आपका जीवन निर्विकारिता का प्रतीक बन जायेगा और आप विचारयुक्त सीधे रास्ते पर अग्रसर हो जाओगे। जानो कि विचार ही जीत है जबकि अविचार हार है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विचारयुक्त रास्ते का बहुत गहनता से वर्णन किया गया है पर आप उस विचार को समझ नहीं पाते क्योंकि आप प्रतिदिन सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ नियमित रूप से पढ़ते तो हो पर उसमें विदित युक्ति को, उस ज्ञान को जीवन में उतारना सुनिश्चित नहीं करते। सजनों यही आपकी हार का कारण है। इस हार को विजय में बदलने के लिए इस क्रिया के प्रति एक महीना अपने आप को बाध्य करो। ऐसा करने से यह क्रिया करना आपकी आदत बन जायेगी और आपको अच्छा लगेगा। ज्यों-ज्यों इस पर मज़बूत होते जाओगे, त्यों-त्यों आपकी सुरत कंचन होती जायेगी। जब सुरत कंचन हो गई

तो शौह को प्रिय लगेगी। शौह को प्यारी लगेगी तो अपने घर में स्थित हो जायेगी। तब जीवन शान से चलेगा। सजनों वह शान कोई लौकिक शान नहीं अपितु अलौकिक शान होगी। लौकिक शान में तो ऊँच-नीच चलती है परन्तु अलौकिक शान सदा समरस प्रकाशमान होती है। ऐसा होने पर ही सर्वत्र यश-कीर्ति फैलती है।

सजनों आपसे अनुरोध है कि ऐसी हिम्मत दिखाकर अपने आचार-विचार व व्यवहार द्वारा मानवीय गुणों का प्रदर्शन करो ताकि आपकी सन्तान, आपके मित्रजन भी इस क्रिया से लाभान्वित हो सकें। यह अपने पर उपकार के साथ-साथ परोपकार करने की भी बात है। अब परोपकारी की तो जीत होती ही होती है। याद रखो जो भी परोपकरी जीव जगत-विजयी होकर अपने सच्चे घर लौटता है, उसका स्वागत तीनों लोकों में होता है। सजनों इस द्वारे से जुड़े होने के नाते मानो कि यह आप कर सकते हो। सो सजनों कुदरत प्रदत्त इस मौके का लाभ उठाओ और अपने अन्दर परिवर्तन लाना स्वीकारो ताकि आपका जीवन युग, सजन युग बने जाये। अब इस हेतु सब मिल कर बोलोः-

जीवन युग सजन-युग बन जाए,

वैसी सुमति बख़्शो जी।

समभाव हृदय में स्थित हो जाए,

वैसी युक्ति बख़्शो जी।

जो भी करें, सुकर्म कहलाए,

वैसी हस्ती बख़्शो जी।

इस घट में सतवस्तु छा जाए,

वैसी विरक्ति बख़्शो जी

संतोष-धैर्य विचार में आए,

वैसी निर्मलता बख़्शो जी।

सच्चाई धर्म अटलता पाए,

वैसी शक्ति बख़्शो जी।

ख़्याल ध्यान स्थिर हो जाए,

वैसी अफुरता बख़्शो जी।

परउपकार निष्काममय हो,

वैसी निर्भयता बख़्शो जी।

सुरत घर पहुँच विश्राम को पाए,

वैसी मस्ती बख़्शो जी।

सजनों सत्संग में आप जो कीर्तन ग्रन्थ से सुनते हो, उसे ध्यान से सुना व समझा करो और उसी कीर्तन को घर जाकर भी पढ़ा करो। इस सन्दर्भ में उस कीर्तन के अंतर्गत जो कुछ छोड़ने को कहा जाता है वह तुरन्त छोड़ दिया करो और जो धारण करने को कहा जाता है वह धारण कर लिया करो। इस तरह सजनों कुरस्ता छोड़ सीधे रास्ते पर आ जाओ। जान लो इतनी सी मेहनत अगर दिल से की जाए तो आपके जीवन का सुधार व उद्धार हो सकता है। अतः इस तरीके को वर्ताव में लाकर अपनी किस्मत आप बनाओ।

आप इस कार्य में सफल हों इन्हीं शुभ कामनाओं सहित।

नोटः-

1 अगले इतवार **25** तारीख से पौने दो महीने का शाम का पाँच से साढ़े पाँच या साढ़े पाँच से छः बजे के मध्य किए जाने तक वाले पाठ का शुभारम्भ होना है। इसे स्वयं भी याद रखना है और सबको बताना भी है।

2 मँगलवार **27** तारीख को अखण्ड हवन है। उसमें सबने पहुँचना है क्योंकि अखण्ड हवन नीति के अन्दर है।